ओ३म्

वैदिक संस्कृति का उद्घोषक

वैदिक सार्वदेशिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली का साप्ताहिक मुख-पत्र

शुल्क :- एक प्रति 5 रुपया (भारत में) वार्षिक 250 रुपये तथा आजीवन 2500 रुपये

वर्ष 11 अंक 41 | 28 जनवरी से 03 फरवरी, 2016 | दयानन्दाब्द 192 | सृष्टि सम्वत् 1960853116 सम्वत् 2072 मा. कृ. 04

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की अन्तरंग सभा की महत्त्वपूर्ण बैठक सोल्लास सम्पन्न

सभा के तीनों पक्षों द्वारा किये जा रहे एकता प्रयास का किया गया अनुमोदन

कन्या भ्रूण हत्या, गौहत्या, नशाखोरी, अश्लीलता एवं धार्मिक पाखण्ड के विरुद्ध राष्ट्रीय स्तर पर जन–चेतना अभियान की बनी योजना

20 मार्च 2016 से 13 अप्रैल, 2016 तक अर्द्धकुम्भ मेला हरिद्वार में विशाल वेद प्रचार शिविर के आयोजन का निर्णय

समस्त कार्यक्रमों को सफल बनाने के लिए सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी की आर्य जनता से मार्मिक अपील

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की अन्तरंग सभा की बैठक 24 जनवरी, 2016 को सभा के विशाल सभागार में देश के लगभग 14 प्रदेशों के प्रतिनिधियों की उपस्थिति में सोत्साह सम्पन्न हुई। बैठक में जहाँ सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के तीनों पक्षों द्वारा किये जा रहे एकता प्रयास का सर्वसम्मति से अनुमोदन किया गया वहीं आगामी मई मास तक होने वाले अनेक प्रान्तीय एवं राष्ट्रीय स्तर के कार्यक्रमों की योजना भी बनाई गई। भावी कार्यक्रमों के विषय पर अपने–अपने सुझाव प्रस्तुत करते हुए सभी सदस्यों ने इस बात पर जोर दिया कि वर्तमान में आर्य समाज को देश की जनता का नेतृत्व करना चाहिए। क्योंकि लोग विभिन्न समस्याओं से त्रस्त हैं, दुःखी हैं। उनके दैनन्दिन जीवन में आने वाली विभिन्न कठिनाईयाँ उनके लिए मुसीबत बनी हुई है। अतः आर्य समाज को आम आदमी की आवाज बनकर उनके साथ खड़ा होना चाहिए। देश में बढ़ती जा रही नशाखोरी, कन्याभ्रूण हत्या, गौहत्या, धार्मिक अन्धविश्वास एवं पाखण्ड, अश्लीलता, चरित्रहीनता, महिलाओं और किसानों पर होने वाले अत्याचार, जातिवाद एवं साम्प्रदायिकता, भ्रष्टाचार एवं रिश्वतखोरी आदि समस्याएं हमारे सामने चुनौती बनकर खड़ी हुई हैं। अतः इन समस्याओं के विरुद्ध आम जनता को साथ लेकर आर्य समाज के नेतृत्व में राष्ट्रव्यापी जनचेतना अभियान एवं आन्दोलन शुरू करना चाहिए।

अनेकों महत्त्वपूर्ण विषयों पर निर्णय लेते हुए अन्तरंग ने निश्चय किया है कि आगामी 2 से 13 मार्च, 2016 तक स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ, आश्रम टिटौली, रोहतक में 9वां बेटी बचाओ चतुर्वेद पारायण महायज्ञ आयोजित किया जायेगा जिसमें हजारों स्त्री–पुरुष युवक–युवतियाँ आहुतियाँ देकर कन्या भ्रूण हत्या, महिला उत्पीड़न एवं नशाखोरी के विरुद्ध संकल्प लेंगे।

20 मार्च से 13 अप्रैल, 2016 (बैसाखी) तक अर्द्धकुम्भ मेला हरिद्वार में विशाल वेद प्रचार शिविर का आयोजन होगा जिसमें पाखण्ड–खण्डिनी पताका फहराई जायेगी तथा अन्य सामाजिक बुराईयों के विरुद्ध जन–चेतना रैलियाँ, नुक्कड़ नाटक, विचार गोष्ठियाँ एवं सम्मेलन आयोजित किये जायेंगे। इस शिविर में बेटी बचाओ एवं पाखण्ड हटाओ चतुर्वेद पारायण महायज्ञ का भी भव्य आयोजन किया जायेगा।

24 अप्रैल से 1 मई, 2016 तक पूरे पंजाब के विभिन्न जिलों से होती हुई जन–चेतना यात्रा निकाली जायेगी जिसका समापन चण्डीगढ़ में होगा और पंजाब के राज्यपाल तथा मुख्यमंत्री को ज्ञापन भी दिया जायेगा। इस यात्रा में नशाखोरी तथा कन्या भ्रूण के सम्बन्ध में विशेष कार्यक्रम प्रस्तुत किये जायेंगे।

मई मास में ही राजस्थान में भी जन–चेतना यात्रा का भव्य आयोजन किया जायेगा। इस यात्रा के अन्तर्गत जयपुर, दौसा, भरतपुर, अलवर, झुंझुनू, चुरू और सीकर आदि जिलों में सैकड़ों जन–सभाएं चेतना रैलियाँ, पत्रकार सम्मेलन एवं विचार गोष्ठियाँ आयोजित की जायेंगी।

इस अवसर पर बैठक को सम्बोधित करते हुए सभा के निवर्तमान प्रधान एवं विश्व विख्यात आर्य संन्यासी स्वामी अग्निवेश जी ने सभा के संयोजन में संचालित समस्त जन–अभियान तथा जन–आन्दोलनों को अपना भरपूर शेष पृष्ठ 5 पर

सम्पादक - प्रो. विट्ठलराव आर्य

'संध्या' द्वारा सामाजिक दायित्व की पूर्त्ति

–प्रो. डॉ. सुन्दरलाल कथूरिया, डी. लिट्.

मनुष्य सामाजिक प्राणी है। वह समाज में रहता है और अन्य प्राणियों के सम्पर्क में आता है। उसके जीवन की सारी आवश्यकताएँ– अन्न, वस्त्र, भवन एवं सुख–सुविधा की अन्य सारी सामग्रियाँ– अन्य प्राणियों के सहयोग से ही पूरी होती हैं। एक कहावत है कि अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ सकता अर्थात् अकेला मनुष्य अपने आप, बिना अन्य प्राणियों के सहयोग के जीवन की हर आवश्यकता को पूरा नहीं कर सकता। जीवन–यापन के लिए उसे जड़–चेतन का सहयोग लेना ही पड़ता है। भोजन के बिना मनुष्य जीवित नहीं रह सकता, पर भोजन कैसे मिलेगा? अनाज कोई पैदा करेगा, उसे पीसेगा कोई और तथा आटा गूँथ कर रोटियाँ कोई और सेकेगा और खायेगा कोई और। साग–सब्जियाँ, फल आदि पेड़–पौधों से आयेंगी। यही स्थिति वस्त्र, भवन–निर्माण तक से लेकर जीवन के अन्य सुख–सुविधाओं की है। बहुत–सी चीजों के लिए मनुष्य प्रकृति पर आश्रित है, प्राकृतिक उपादानों से उसका जीवन चल रहा है। वायु, जल, सूर्य, चन्द्रादि के प्रकाश के बिना मनुष्य कब तक जीवित रह सकता है? गाय, भैंस, बकरी आदि से मिलने वाले दूध से ही मनुष्य पौष्टिकता प्राप्त करता है। इस प्रकार हम जहाँ तक विचार करेंगे यह पायेंगे कि हम मनुष्य समाज के ही नहीं, अन्य प्राणियों, वनस्पति जगत् एवं समस्त प्रकृति के ऋणी हैं, और इन सबसे बढ़कर सारी सृष्टि के कर्त्ता परमेश्वर के ऋणी हैं, जिसने हमें यह कर्म योनि तथा सारी सुख–सुविधाएँ भोगने की सामर्थ्य दी है। इसके लिए हमें ईश्वर, सारी सृष्टि, सृष्टि के प्राणियों एवं मानव–समाज के प्रति कृतज्ञ होना चाहिए तथा यह समझना चाहिए कि केवल अपने प्रति ही नहीं, समाज के प्रति भी हमारा कुछ दायित्व है, कुछ कर्त्तव्य–कर्म हैं, जिसकी हमें पूर्ति करनी है। इस कर्त्तव्य–कर्म की पूर्ति की ओर वैदिक संध्या के 'मनसा परिक्रमा' के छह मंत्रों में संकेत किया गया है।

'मनसा' का अर्थ है मनसे, 'परिक्रमा' का अर्थ है चक्कर लगाना। 'मनसा परिक्रमा' एक लाक्षणिक प्रयोग है, जिसका लक्ष्यार्थ है चिन्तन करना अर्थात् मन से ईश्वर की सर्वव्यापकता और रक्षक रूप का चिन्तन–मनन और ध्यान करना तथा रक्षा के लिए उसके विभिन्न चित्र–विचित्र रूपों को देखकर उसके प्रति श्रद्धावनत एवं कृतज्ञ होना। यद्यपि 'मनसा परिक्रमा' के छह मंत्रों में छह ही दिशाओं का उल्लेख हुआ है, तथापि इनमें स्वतः ही ईशान आदि कोणों का भी समावेश है; साथ ही इन दिशाओं में प्रकाशमान, ऐश्वर्यशाली ईश्वर की उपस्थिति उसकी सर्वव्यापकता की भी व्यंजना है। ओ३म् उस ईश्वर का निज नाम है, सर्वश्रेष्ठ नाम है, किन्तु गुण–कर्मों के आधार पर उसके जो अनन्त नाम हो सकते हैं, उनमें से सौ का उल्लेख ऋषिवर दयानन्द ने 'सत्यार्थप्रकाश' के प्रथम समुल्लास में किया है। उनमें से 'मनसा परिक्रमा' के मन्त्रों में अग्नि, इन्द्र, वरुण, सोम, विष्णु और बृहस्पति के नाम आये हैं। कहने की आवश्यकता नहीं कि ये 'ईश्वर के ही नाम हैं। वह ईश्वर तो एक ही है, किन्तु उसके गुण कर्मों के आधार पर उसे अनेक नामों से पुकारा जाता है– 'एकं सद्विप्रा बहुधा वदन्ति।'

'मनसा परिक्रमा' के प्रथम मन्त्र में पूर्व अथवा जिस ओर मुख हो उस दिशा का वर्णन है। उस दिशा का अधिपति, शासक या राजा अग्नि अर्थात् प्रकाश–स्वरूप वह ईश्वर है जो बंधन रहित है, रक्षक है। आदित्य अर्थात् सूर्य या आदित्य ब्रह्मचारी (अड़तालीस वर्ष तक ब्रह्मचर्य का पालन करने वाले) उसके बाण हैं। उस अधिपति, रक्षक परमेश्वर और उसके बाणों अर्थात् शक्तियों के लिए हम बारम्बार नमस्कार करते हैं। जो हमसे द्वेष करता है या जिससे हम द्वेष करते हैं, उसे हम आपकी दाढ़ में रखते हैं अर्थात् आपकी न्याय व्यवस्था को सौंपते हैं। प्रकारान्तर से 'योऽस्मान् द्वेष्टि....' के द्वारा ईश्वर से यह प्रार्थना की गयी है कि जो हम से द्वेष करता है या जिससे हम द्वेष करते हैं, वह प्रकाशमान अग्निरूपा ईश्वर हमारे द्वेष भावों को दग्ध कर दे तथा हममें प्रेम सौहार्द एवं अहिंसा–भाव का विकास करे।

दक्षिण अथवा दाहिने हाथ की दिशा का अधिपति इन्द्र अर्थात् सर्वैश्वर्यशाली परमेश्वर है। वृश्चिक– सर्पादि प्राणियों की वह रक्षा करता है। अथवा सर्पादि कीट–पतंगों और उनके समान कुटिल प्राणियों से हमारी रक्षा करता है। ज्ञानी जन उसके बाण अथवा शक्तियाँ हैं। हम उस सर्वैश्वर्यशाली परमेश्वर और उसकी शक्तियों को बार–बार नमन करते हैं। (शेष पूर्ववत्) पश्चिम अथवा पीठ की ओर की दिशा का अधिपति वरुण अर्थात् वरने योग्य सर्वोत्तम परमेश्वर है, जो पृदाकू अर्थात् बृहदाकार विषधर प्राणियों से हमारी रक्षा करता है, विभिन्न प्रकार के अन्नादि उसकी शक्तियाँ (बाण) हैं अर्थात् नाना प्रकार के अन्नों–ओषधियों से वह हमारी रक्षा करता है। (शेष पूर्ववत्) उत्तर अथवा बाएँ हाथ की दिशा का अधिपति सोम अर्थात् शान्तरूप परमेश्वर है। वह स्वयंभू (अजन्मा) है और रक्षक है। बिजली उसी की शक्ति है। (शेष पूर्ववत्) नीचे की दिशा का अधिपति विष्णु अर्थात् सर्व व्यापक जगदीश्वर है। वह कल्माषग्रीव है अर्थात् चारों ओर फैली हरियाली, बेल–बूटों, वृक्षों आदि के द्वारा हमारी रक्षा करता है, क्योंकि वृक्ष उसके बाण (शक्तियाँ) हैं। (शेष पूर्ववत्) ऊपर की दिशा का अधिपति बृहस्पति अर्थात् बड़े–बड़ों और वाणी–वेदशास्त्रादि का स्वामी परमेश्वर ही है। वह पवित्र और रक्षक है तथा वर्षा उसके बाण हैं अर्थात् वह वर्षा के द्वारा प्राणियों की रक्षा करता है। (शेष पूर्ववत्)

'मनसा परिक्रमा' के इन छहों मंत्रों में ईश्वर की सर्वव्यापकता, उसके रक्षक–रूप तथा उसकी विभिन्न शक्तियों (बाणों) का उपलक्षण रूप में वर्णन हुआ है। वह सबका रक्षक है तथा उसकी शक्तियाँ भी अनन्त हैं, यहां तो केवल सांकेतिक रूप से उन शक्तियों का दिग्दर्शन मात्र कराया गया है। सूर्य की किरणों, नाना प्रकार के अन्नों, विद्युत, हरियाली, पेड़–पौधों, वर्षा आदि के द्वारा वह सर्वशक्तिमान सबकी रक्षा और पालन–पोषण कर रहा है। कर्मयोनि में होने से मनुष्य इन बातों को समझ सकता है। इस कार्य में विद्वान् वेदशास्त्रादि भी उसकी सहायता कर सकते हैं। ईश्वर ने मनुष्य को वाणी दी है, बुद्धि दी है, चिन्तन–मनन की शक्ति दी है। वह ईश्वरीय गुणों का अनुकरण कर सकता है। उन गुणों को आचरण में ढाल सकता है। सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान, सर्वरक्षक ईश्वर और उसकी विराट् शक्तियों के प्रति कृतज्ञता प्रकट कर सकता है। इसी दृष्टि से 'मनसा परिक्रमा' के इन सभी मन्त्रों में 'तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु' की आवृत्ति हुई है। हम उस सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान, सर्वरक्षक प्रभु का धन्यवाद करते हुए उसके आधिपत्य, रक्षा–कार्य एवं जीवनदायक–पालन–पोषण करने वाली नानाविध सामग्रियों के दान के लिए उसे तथा उसकी विभिन्न शक्तियों (बाणों) को बारम्बार श्रद्धा और भक्ति के साथ नमन करते हैं।

'मनसा परिक्रमा' के इन छह मन्त्रों में सामाजिक दायित्व की पूर्त्ति का मार्ग सुझाया गया है, यह बताया गया है कि मनुष्य अन्य प्राणियों के साथ कैसा व्यवहार करे। ऋषिवर दयानन्द ने वैदिक संध्या में मनुष्य के जिन तीन कर्त्तव्य–कर्मों का उल्लेख किया हैं, उनमें से दूसरा है कि वह औरों के साथ क्या करे– और इस कर्त्तव्य की पूर्त्ति 'मनसा परिक्रमा' के छह मंत्रों के केन्द्र–बिन्दु को हृदयंगम कर एवं तदनुकूल आचरण कर मनुष्य कर सकता है। वेद के प्रत्येक मन्त्र का कोई केन्द्र–बिन्दु होता है, कोई–न–कोई केन्द्रीय भाव–विचार होता है जो उस मन्त्र के रहस्य को खोल देता है तथा हमें तदनुकूल आचरण की प्रेरणा देता है। उदाहरण के लिए गायत्री मन्त्र का केन्द्र–बिन्दु या केन्द्रीय विचार है, 'धियो यो नः प्रचोदयात्'। 'मनसा परिक्रमा' के छहों मन्त्रों का केन्द्र–बिन्दु या केन्द्रीय विचार है– 'यो३स्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः।' इस अंश की आवृत्ति 'मनसा परिक्रमा' के छहों मन्त्रों में हुई है, जिससे इसका महत्त्व स्वतः स्पष्ट है। इसमें 'जम्भे' का अर्थ है दाढ़ में और 'दध्मः' का अर्थ है रखते हैं। इसका भावार्थ है नष्ट करना। साधक प्रभु से प्रार्थना करता है कि जिस किसी से हम द्वेष करते हैं या जो कोई हमसे द्वेष करता है, कृपा करके हमारे द्वेष–भावों को नष्ट कर दीजिए। अन्य द्वेष–भाव छोड़ते हैं या नहीं, यह हमारी चिन्ता का विषय नहीं है। अन्यों की चिन्ता छोड़कर हम अपने द्वेष–भाव का तो परित्याग करें समझने की बात यह है कि ईर्ष्या–द्वेष से हिंसा की भावना जागती है और 'योगदर्शन' में पहला 'यम' अहिंसा है, जिससे इसका महत्त्व स्वतः स्पष्ट है। अहिंसा की प्रतिष्ठा हो जाने पर अहिंसक से सभी वैर–भाव का त्याग कर देते हैं– 'अहिंसा प्रतिष्ठायां तत्सन्निधौ वैर त्यागः।' (योग दर्शन) साधक के लिए यह आवश्यक है कि मन, वचन और कर्म से हिंसा का परित्याग करे अर्थात् सच्चे अर्थों में अहिंसक बने। वह शारीरिक, वाचिक या मानसिक हिंसा में प्रवृत्त न हो।

हिंसा के परित्याग के लिए हिंसा के वास्तविक स्वरूप को जान लेना अत्यावश्यक है। मन, वाणी या कर्म से, अन्याय या वैर भाव से किसी प्राणी–मनुष्य, पशु–पक्षी, कीटपतंग आदि को दुःख देना या दुःख देने का प्रयास करना 'हिंसा' है। हिंसा के प्रमुख कारण है–लोभ, क्रोध, मोह आदि। हिंसा छोड़ने के उपायों में लोभ, क्रोध, मोहादि के परित्याग के साथ हिंसा से उत्पन्न होने वाले दोषों की जानकारी तथा ईश्वर को सभी प्राणियों का माता–पिता, गुरु, राजा आदि मान लेना है।' मनसा परिक्रमा' के छहों मन्त्रों में ईश्वर को अधिपति (राजा/शासक) कहा गया है और उसके उस रूप को बारम्बार नमन किया गया है। जगदीश्वर का यह रूप हमें हिंसा से बचाने में सहायक हो सकता है।

हिंसा के परित्याग के लिए हिंसा के वास्तविक स्वरूप को जान लेना अत्यावश्यक है। मन, वाणी या कर्म से, अन्याय या वैर भाव से किसी प्राणी–मनुष्य, पशु–पक्षी, कीटपतंग आदि को दुःख देना या दुःख देने का प्रयास करना 'हिंसा' है। हिंसा के प्रमुख कारण है–लोभ, क्रोध, मोह आदि। हिंसा छोड़ने के उपायों में लोभ, क्रोध, मोहादि के परित्याग के साथ हिंसा से उत्पन्न होने वाले दोषों की जानकारी तथा ईश्वर को सभी प्राणियों का माता–पिता, गुरु, राजा आदि मान लेना है।' मनसा परिक्रमा' के छहों मन्त्रों में ईश्वर को अधिपति (राजा/शासक) कहा गया है और उसके उस रूप को बारम्बार नमन किया गया है। जगदीश्वर का यह रूप हमें हिंसा से बचाने में सहायक हो सकता है।

'मनसा परिक्रमा' के छह मन्त्र हमें यह समझाते हैं कि हम किसी के साथ ईर्ष्या–द्वेष न करें; सबके साथ प्रेमपूर्वक व्यवहार करें। आर्यसमाज के सातवें नियम में भी इसी का संकेत है– 'सब से प्रीतिपूर्वक, धर्मानुसार यथायोग्य वर्तना चाहिए।' यदि हम अन्यों से ईर्ष्या–द्वेष न रखेंगे तो आर्य समाज का नवां नियम हमारे जीवन में चरितार्थ हो जाएगा, जो प्रत्येक आर्य को यह समझाता है कि 'प्रत्येक को अपनी ही उन्नति में सन्तुष्ट न रहना चाहिए, किन्तु सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिए।' इस नियम से यह भी संकेतित है कि हम दीन–दुखियों, दलितों–शोषितों की सहायता करें, उन्हें आगे बढ़ाने और उन्नत बनाने की भरसक चेष्टा करें, क्योंकि यह हमारा सामाजिक दायित्व है। हिंसा और वैरभाव का परित्याग कर हम प्राणिमात्र के साथ अहिंसक व्यवहार करें, क्योंकि सभी प्राणी उसी परम पिता की सन्तान हैं। जीवन में वास्तविक रूप में हिंसा का परित्याग कर जो साधक अहिंसा को अपना लेते हैं, वैरी भी उनके मित्र बन जाते हैं और हिंस्र पशु भी उनके सामने नत मस्तक हो जाते हैं। अनेक ऋषि–मुनियों एवं अहिंसक महापुरुषों का जीवन इसका साक्ष्य प्रस्तुत करता है। बहुत–से अबोध बच्चों (जिनमें हिंसा–भाव नहीं था) का पालन–पोषण हिंस्र भेड़ियों ने किया है– इसके भी प्रमाण उपलब्ध हैं।

पर्यावरण संतुलन के संकेत भी 'मनसा परिक्रमा' के मन्त्रों में हैं। इन मन्त्रों में सूर्य की किरणों वर्षा, अन्नादि के साथ विषैले–हिंस्र प्राणियों का भी वर्णन है। ईश्वर की चित्र–विचित्र सृष्टि में सभी प्राणियों का पर्यावरण संतुलन में अपना महत्त्व है। उन प्राणियों को हानि पहुँचाने या उनकी हिंसा करने का हमें कोई अधिकार नहीं है। पर्यावरण के सन्तुलन को बिगाड़ने या पर्यावरण को प्रदूषित करने का भी हमें कोई अधिकार नहीं है। और यदि हम इसके विपरीत करेंगे तो इसके परिणाम भयंकर होंगे। बेल, बूटे, हरियाली, पेड़–पौधे आदि भी उस प्रभु के बाण हैं, जिन्हें ईश्वर ने हमारी रक्षा के लिए बनाया है। उन्हें हानि पहुँचाना हमारे हित में नहीं। उन्हें काट कर हम न केवल पर्यावरण सन्तुलन को नष्ट करते हैं, वरन् अपना हिंसक रूप भी उजागर करते हैं। हमारा सामाजिक दायित्व है कि ईर्ष्या–द्वेष, वैर भाव, हिंसा आदि को छोड़कर हम अन्य प्राणियों पर दया करें और सदैव यह याद रखें–

विधि के बनाये जीव जेते हैं जहां के तहां
खेलत फिरत तिन्हें खेलन फिरन देव।

–बी–३/७६, जनकपुरी,
नई दिल्ली–११००५८

पंच महायज्ञ पांच कष्टों को काटने वाले होते हैं

– खुशहाल चन्द्र आर्य

हमारे त्यागी, तपस्वी, विद्वान्, ऋषि मुनियों ने हर व्यक्ति को विशेष कर गृहस्थी को पांच महायज्ञ नित्य सुचारू रूप से करने का आदेश दिया है। इन पांच महायज्ञों से अनेकों लाभ तो है ही, पर विशेष लाभ यह है कि ये पांचों यज्ञ पांच किस्म के दुःखों व कष्टों को दूर करने वाले भी हैं। यानि इन यज्ञों से दुःखों व कष्टों का निराकरण होता है। वे पांच महायज्ञ हैं – (1) ब्रह्मयज्ञ (2) देवयज्ञ (3) पितृयज्ञ (4) बलिवैश्व देवयज्ञ (5) अतिथियज्ञ और कष्ट है आत्मिक, शारीरिक, पारिवारिक, प्राकृतिक तथा अज्ञान से बढ़ती दूरियाँ। पांच यज्ञों से पांच कष्ट कैसे दूर होते हैं, उनका संक्षिप्त परिचय यहाँ देते हैं।

1. ब्रह्मयज्ञ :– ब्रह्मयज्ञ, आत्मा के दुःखों व कष्टों का निवारण करके, आनन्द की अनुभूति करवाता है। ब्रह्मयज्ञ का तात्पर्य है सन्ध्योपासना करना तथा वेद आदि धार्मिक पुस्तकों का स्वाध्याय करना। मनुष्य को ईश्वर की स्तुति, प्रार्थना व उपासना नित्य प्रातः व सायं करनी चाहिए। इससे आत्मा में आये विकार यानि ईर्ष्या, द्वेष, घृणा, हिंसा आदि दोष नष्ट हो जाते हैं और उनकी जगह प्रेम, दया, करुणा, परोपकार की भावना व आनन्द का संचार होता है। ईश्वर की स्तुति, प्रार्थनोपासना का तात्पर्य है कि हम किसी एक शान्त व स्वच्छ स्थान पर मनको सब ओर से हटाकर, एकाग्र चित्त से अपनी दृष्टि को बाहर से हटाकर अन्दर डालकर पहले तो हम ईश्वर की स्तुति यानि प्रशंसा करें कि हे ईश्वर! आप कितने सामर्थ्यवान् हो और किस प्रकार सृष्टि की रचना करके उसका संचालन व संहार भी आप ही करते हो और जीवों को उनके किये अच्छे व बुरे कर्मों का फल भी आप ही अपनी न्याय व्यवस्था से किस प्रकार देते हो यह ध्यान देना चाहिए। फिर अपने पूर्ण सामर्थ्य के बाद जो काम नहीं बनता हो उसकी सफलता पाने के लिए और अधिक सामर्थ्य पाने की ईश्वर से प्रार्थना करनी चाहिए। फिर उसके पास बैठ कर अपने अवगुणों व दोषों का ध्यान करना चाहिए और ईश्वर के गुणों का स्मरण करते हुए अपने दोषों को छोड़ना और ईश्वर के गुणों को अपने जीवन में उतारने का प्रयत्न करना चाहिए। इस प्रकार मनुष्य ब्रह्मयज्ञ से अपने दुर्गुणों को छोड़ता है और ईश्वर के गुण दया, करूणा व परोपकार की भावना से जुड़ता हुआ अपने जीवन को पवित्र बनाता है। ब्रह्मयज्ञ में सन्ध्योपासना के साथ–साथ वेदों तथा धार्मिक पुस्तकों का स्वाध्याय करना भी आता है जिससे मनुष्य अपने ज्ञान को बढ़ाता है और वेदों के अनुसार चल कर मोक्ष की तरफ अग्रसर होता है, जो जीव का अन्तिम लक्ष्य है, जिसको पाने के लिए जीव अच्छे कर्म करते हुए मनुष्य योनि में आता है।

2. देवयज्ञ :– यह महायज्ञ मनुष्य के शरीर से सम्बन्ध रखता है। देवयज्ञ का तात्पर्य है, हवन करके सब जड़ देवों को प्रसन्न करना होता है। विश्व में पांच जड़ देवता है, जिनके नाम हैं, जल, वायु, अग्नि, पृथ्वी और आकाश। इन पांचों जड़ देवताओं का अग्नि मुख है। जिस प्रकार हम अपने शरीर को स्वस्थ रखने के लिए मुख से भोजन करते हैं और उस भोजन का पेट में जाकर रस, रक्त आदि बनकर पूरे शरीर में जाता है और पूरे शरीर की कमियों की पूर्ति करता है, तब मनुष्य स्वस्थ रह पाता है। यही काम यज्ञ का है। वह भी अग्नि में जो घृत, सामग्री व समिधा आदि डाली जाती है। उसके गुण अग्नि में डालने से हजार गुणा बढ़ जाते है और वह सुगन्ध जल, वायु, अग्नि, पृथ्वी व आकाश में फैल कर सबको सुगन्धित कर देती है जिससे सारा वातावरण शुद्ध और पवित्र हो जाता है। ऑक्सीजन की मात्रा बढ़ जाती है जो जीव के लिए लाभदायक है। हाईड्रोजन व नाईट्रोजन गैस कम हो जाती है जिससे मनुष्य का शरीर स्वस्थ रहता है यानि शरीर में जो रोग व बीमारियाँ रहती हैं, वे दूर जाती हैं और शरीर स्वस्थ हो जाने से मनुष्य का जीवन सुखी व आनन्दित बन जाता है। इस प्रकार देवयज्ञ से शरीर के कष्ट दूर हो जाते हैं।

3. पितृयज्ञ :– पितृयज्ञ से परिवार व गृहस्थ सुखी बनता है। जिस घर में पितर जनों का आदर व सम्मान होगा तथा उनकी सभी आवश्यकताएँ पूर्ण होगी तो उनके आशीर्वाद और उनके अनुभवों का लाभ उस परिवार को मिलेगा जिससे वह परिवार भी सुखी बना रहेगा। हमारे पौराणिक भाई मरे हुओं का श्राद्ध व तर्पण करते हैं, परन्तु वेद हमें मरे हुए पितरों का श्राद्ध व तर्पण करना नहीं सिखाता बल्कि जीवित माता–पिता व वृद्धजनों की श्रद्धापूर्वक सेवा, सुश्रूषा करके उनकी आत्मा को प्रसन्न रखना सिखाता है। जिसको श्राद्ध कहते हैं। अपने स्वभाव व व्यवहार से बड़ों के मन को तृप्त रखना ही तर्पण कहलाता है जो जीवितों का ही कर पाना सम्भव है। मरने के बाद करना एक अन्धविश्वास ही है।

4. बलिवैश्वदेव यज्ञ :– इस यज्ञ से सब जीवों को प्रसन्न रखना है। जो भूखा है उसको भोजन देना, जो प्यासा है उसको जल देना। जो असहाय है उसकी सहायता करना। जो जीव हम पर आश्रित है उसकी रक्षा करना ही बलिवैश्व देवयज्ञ है। इस यज्ञ में जीव हिंसा का कोई स्थान नहीं है। जब सब जीव प्रसन्न रहेंगे तो प्रकृति भी शान्त रहेगी उसमें किसी प्रकार का प्रकोप नहीं होगा और सब जगह शान्ति बनी रहेगी।

5. अतिथि यज्ञ :– घरों में अज्ञानता से जो वैमनस्य बना रहता है, आपस में वैरभाव रहता है और परस्पर लड़ते–झगड़ते रहते हैं, अतिथि यज्ञ से ये सब समाप्त हो जाते हैं। अतिथि यज्ञ का तात्पर्य यह है कि गृहस्थियों के घर पर साधु, सन्त, संन्यासी, विद्वान्, वानप्रस्थी व गुरुकुलों के आचार्यों व ब्रह्मचारियों का आना–जाना बना रहना। जिस गृहस्थ में संन्यासी, वानप्रस्थी व विद्वानों का आदर सत्कार होगा, उनके घरों में प्रवचन होंगे, उपदेश होंगे तो उस घर में परस्पर का विरोध व कटुता कभी भी नहीं रहेगी, कारण परस्पर का विरोध व कटुता अज्ञान से उत्पन्न होती है। जब संन्यासियों और विद्वानों के सद्उपदेश जिस घर में होंगे उस घर से अज्ञानता दूर हो जायेगी और परस्पर का प्रेम व सहृदयता का वातावरण बन जायेगा, तब पति–पत्नी, सास–बहू, भाई–भाई का झगड़ा कभी नहीं होगा और वह घर परस्पर के शुद्ध व्यवहार से स्वर्ग के समान बन जायेगा। इस प्रकार इन पांच महायज्ञों से ऊपर लिखे इन पांच दुःखों व कष्टों की निवृत्ति होती है। इसलिए हर व्यक्ति को विशेष कर हर गृहस्थी को अपना जीवन व गृहस्थ को सुखी बनाने के लिए ये पांच महायज्ञ अवश्य करने चाहिए।

इस लेख को लिखने के भाव मेरे मन में तब जगे जब आर्य समाज बड़ा बाजार का वेद सप्ताह यानि श्रावणी उपाक्रम जो 23 से 29 अगस्त, 2015 तक मनाया गया था। उसी के प्रथम दिन प्रातः के सत्र में पूज्य आचार्य ब्रह्मदत्त जी का प्रवचन इसी विषय पर हुआ था। वह प्रवचन मुझे बहुत ही अच्छा लगा, इसलिए इसका लाभ अन्य विज्ञ पाठकजन भी उठा सकें। इस भावना से प्रेरित होकर मैंने यह लेख लिखा है। आशा है इसका अधिक से अधिक लाभ पाठकगण उठायेंगे।

– द्वारा गोविन्द राम आर्य एण्ड संस
180, महात्मा गांधी रोड,
(2 तल्ला), कोलकाता–700007
मो.:–9830135794

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

– सुन्दर लाल प्रहलाद चौधरी

सा. – सारे मानव को सुसंस्कारित जीवन हेतु आर्य बनना चाहिए।
र. – रग–रग में वैदिक धर्म के सार को जिन्दगी में उतारना चाहिए।
व – वसु आठ सम सेवाधारी बनकर निष्काम सेवा हमें करना चाहिए।
दे – देवता सम देना सीखे, मात पिता गुरु की सेवा करना चाहिए।
शि – शिष्टाचार ही जीवन का लक्ष्य हो, सदा मर्यादा में रहना चाहिए।
क – कर्म सदा जनकल्याणी हो, संत शहीद और समाज सुधारकों के पथ पर चलना चाहिए।
आ – आत्मज्ञान हेतु आध्यात्म को अपनाने आर्ष साहित्य को सतत पढ़ाना चाहिए।
र् – रक्त की हर बूंद राष्ट्र निर्वाण में लगे, ऐसा प्रयत्न करना चाहिए।
य – यज्ञीय जीवन सार्थक होता पंचयज्ञों को सदा जीवन में उतारना चाहिए।
प्र – प्रभु एक निराकार ओ३म् नाम जपे जड़ पूजा आडम्बर से दूर रहना चाहिए।
ति – तिताप दूर होते, हमें प्रतिदिन गायत्री महामंत्र निष्काम जपना चाहिए।
नि – नियम बनाये हर घर चारों वेदों की स्थापना कर नित्य पढ़ना चाहिए।
धि – धिक्कार है उस जीवन को जिसमें साधना नहीं उसे सत्यार्थ प्रकाश पढ़ना चाहिए।
स – सभ्य समाज की स्थापना हेतु जीवन भर दस नियमों को अपनाना चाहिए।
भा – भारत भूमि गौरवान्वित है गुरु विरजानन्द दांडी के शिष्य महर्षि दयानन्द सरस्वती सदा चाहिए।

– अधीक्षक, पोस्ट मैट्रिक अनुसूचित जाति बालक छात्रावास बुरहानपुर (म. प्र.)

पूज्य स्वामी सुमेधानन्द जी व शारद यज्ञ

– आचार्य महावीर

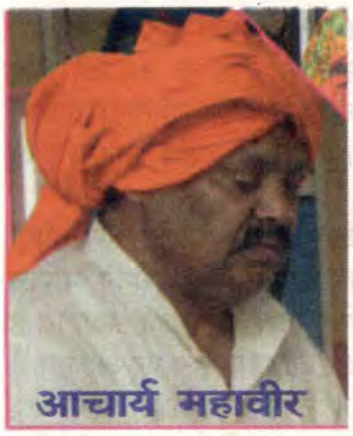

आचार्य महावीर

ऋग्वेद संसार की सबसे प्राचीन पुस्तक है। इस बात को सभी मानते हैं, उसके समय व अवधि के विषय में विमति तो हो सकती है, पर प्राचीनता के विषय में दुनिया के सभी विद्वानों ने इसकी प्राचीनता को सर्वसम्मति से स्वीकारा है। वेद ईश्वरीय वाणी है, ऋषि ने भी आर्य समाज के प्रथम नियम में लिखा है, सब सत्य विद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं उन सबका आदि मूल परमेश्वर है। वेद उस परमेश्वर की वाणी है अतः वेद में जो भी कहा गया है, वह ईश्वर के द्वारा कहा गया जो आदेश दिया गया वह ईश्वर के द्वारा दिया गया आदेश है, यह बात अलग है कि स्वार्थी लोगों ने स्वार्थ के वशीभूत हो, भारतीय संस्कृति की छवि को विकृत रूप से प्रस्तुत करने के लिए वेद मंत्रों की व्याख्या विकृत रूप से की, पर महर्षि दयानन्द जी महाराज की महान अनुकम्पा से वेदों का सही स्वरूप व वेद मंत्रों की सही व्याख्या जन साधारण के सामने आई, उन्हीं के ही अनुसार उनके अनुयायियों के द्वारा भी उनके द्वारा शेष शिष्ट भाग की व्याख्याएँ की गई। आधार ऋषिवर बना गए। तरीका वे प्रस्तुत कर गए अतः उत्तर जीवियों के लिए उत्तरजीवी विद्वानों के लिए वेद की व्याख्या करना आसान हो गया। ऋग्वेद के सातवें मण्डल के 66वें सूक्त के 11वें मंत्र के द्वारा आदिष्ट दुर्लभ शारद यज्ञ का ईश्वर के आदेश को पूज्य स्वामी जी ने शिरोधार्य किया उस यज्ञ को प्रतिवर्ष करने का संकल्प लिया। अपने जीवन में कि ये जाने वाले दीर्घ सत्रीय यज्ञों की कड़ी में शारद यज्ञ के रूप में एक कड़ी और जोड़ दी जो कि विशिष्ट जनों के गले की फांस बन गई। यह यज्ञ उन्हें रुचिकर नहीं लगा। किसी ने स्वामी जी को पाखण्ड का चोला पहनाया तो किसी ने उन्हें जगराते वाला बाबा की उपाधि से विभूषित किया। इनमें से किसी ने भी स्वामी जी के द्वारा अपने हर वर्ष छपने वाले निमन्त्रण पत्रों में वेद के मण्डल सूक्त व मंत्र की संख्या दिए जाने के बाद भी वेद को उठाकर देखने की पढ़ने की मंत्र की व्याख्या पर विचारने की जरूरत नहीं समझी। उन्हें तो बस मुख रूपी तरकश से दुर्वचनों रूपी वाणों से प्रहार करने के लिए एक टारगेट मिल गया था, बस फिर क्या था निकलने लगे एक ऐसे एक जहरीले तीर जो कि उस तपस्वी महान साधक पर निष्प्रभावी होकर गिरते गए। साधक अपनी साधना में लगा रहा शिव अपनी निर्लिप्त भाव से अपनी धूनी रमाता रहा अपनी भक्ति में लगा रहा। देवों को तृप्त करता रहा, ईश्वर के कार्य को अपना भी प्रिय कार्य बना निरन्तर निष्ठा से करता रहा। यज्ञों में विशेष कर शारद यज्ञ स्वामी जी के नाम के साथ ऐसे ही जुड़ गया है जैसे गंगा के साथ भगीरथ का नाम जुड़ गया है। यही यज्ञ स्वामी जी को दिव्य लोकों को भी ले गए।

पूज्य स्वामी जी के बाद मैंने भी उनके संकल्पों को जारी रखने में प्रतिबद्धता जताई। इस विषयक प्रपत्र मैंने सभी आत्मीय जनों को भेजे तो एक आचार्य प्रवर का सहानुभूति वाला पत्र मुझे प्राप्त हुआ जिसमें जो कुछ लिखा वह मैं आप सबके सामने रखकर उसका उत्तर भी अपनी बुद्धि के आधार पर लिख रहा हूँ। पत्र उन्हें लिख रहा था लम्बा हो गया तो उसे लेख का विषय बना उन्हें संक्षिप्त में धन्यवाद सहित उत्तर दे दिया है।

पत्र :– श्री महावीर जी, सप्रेम नमस्ते प्रभो कृपया शमिह तत्रत्यञ्चाशासे, प्रथम 20 अग. आर्य नीति से स्वामी जी के देहान्त का वृत अवगत हुआ। 22 को आर्य मर्यादा में श्रद्धांजलि समाचार अतः संवेदना–संवेदना–संवेदना।

हाँ उत्तराधिकार पर शुभकामना

आपका आर्य मर्यादा में मास पूर्व यज्ञ पर उत्साह पूर्ण लेख पढ़ा। अतः निष्कर्ष यज्ञ में अत्यधिक बैठ स्वामी जी ने स्वास्थ्य बिगाड़ा। अतः युक्त उपयुक्त का पालन हो, तभी गीता युक्ताहार – लगातार यज्ञ चलाना अव्यवहारिक है। मठ चम्बा में भी मैंने बहुत पहले बात की थी। महर्षि ने शास्त्रीय यज्ञों का जटिल जाल देव यज्ञ, अग्निहोत्र, में समेटा है। एक घंटा भर प्रातः सायं का विधान किया है। सारं ततो ग्राह्यपास्यफल्गु यही व्यवहारिक, सरल है, सौदा घाटे का स्वामी जी का स्वास्थ्य सन्देश देता है। सम्भलो। अतः विचारें दिन में दो बार दो तीन घंटे की बैठक पर्याप्त है।

पुनः संवेदना, शुभ कामना, सभी को नमन–स्मरण।

पूर्वोक्त विषय में मेरा मन्तव्य :– पूज्य स्वामी जी महाराज संन्यास की दीक्षा लेने के बाद एकान्तवास के लिए निकल गये थे, जहां तीन वर्षों तक 18–18 घंटे की समाधि पूर्वक गायत्री की गहन साधना करते रहे। अभ्यस्त साधक को लम्बे–लम्बे बैठकों का दुःस्प्रभाव नहीं होता। इसीलिए योग साधना की प्रथम सीढ़ी भी तो आसन ही

है। आसन जिस साधक का सिद्ध हो गया वह लम्बी–लम्बी बैठकें लगाने में सक्षम होता है। योगीजन आसन के सिद्ध होने पर दीर्घकाल तक समाधिस्थ रहते हैं। दूर क्यों जाएं महर्षि इसके प्रमाण हैं रही शरीर के जर्जरता की। इस विषय में उन्हें पूर्वज्ञान था। गृह त्याग के बाद उनके माता–पिता को उनके कारण जो घोर कष्ट हुआ, व्यथा हुई, उसका परिणाम मुझे भोगना पड़ेगा। मेरा अन्त भी कष्टकारी होगा इस बात का उल्लेख वे प्रायः किया करते थे और उनकी यह बात अन्ततः सत्य सिद्ध हुई। हमारे द्वारा हर प्रकार से सुरक्षा दिए जाने के बाद भी उन्हें अन्त में काफी कष्ट उठाना पड़ा जिसका इलाज न डॉक्टरों के पास था और न ही हमारे पास उसके प्रतिकार की क्षमता थी। हम तो परवश हो किं कर्तव्यविमूढ़ता की स्थिति में देख ही सकते थे कुछ कर नहीं सकते थे। पूर्वकृत कर्मों के फल मनुष्य को हर हाल में भोगने ही पड़ते हैं। स्वामी जी की स्थिति प्रत्यक्ष रूप में संदेश दे रही थी –

शयानमनुशेते हि तिष्ठन्तमनुतिष्ठति।
अनुधावति धावन्तम् कर्म पूर्वकृतम् नरः।।

मनुष्य के कर्म मनुष्य के सोते उसके साथ ही सोते हैं। उसके बैठने पर बैठ जाते हैं। उसके दौड़ने पर उसके साथ दौड़ते, अर्थात् हर स्थिति में उसके साथ ही रहते हैं। कभी साथ नहीं छोड़ते। कर्मों की प्रस्फुटिता और सघन साधना दीर्घकालिक अनुष्ठान यज्ञ यागादि यह दोनों अलग–अलग पहलू हैं। एक कृतकर्मों की परिणति है तो दूसरा कर्तव्यों का निर्वहन इन दोनों को एक ही तराजू पर तोलने पर मनुष्य अपने कर्तव्यों को तिलांजलि दे बैठेगा। कर्तव्यों से विमुख हो जायेगा। गीता में श्रीकृष्ण जी कहते हैं–

यज्ञदान तपः कर्म न त्याज्यम् कार्यमेवतद्।
यज्ञोदान तपश्चैव पावनानि मनीषिणाम्।।

यज्ञ, दान और तप यह तीनों ही कर्म मनुष्य को पवित्र करने वाले हैं। भवसागर से पार करने वाले हैं। अतः मनुष्यों को चाहिए कि इन तीनों कर्मों को अवश्य करें इन्हें कभी न छोड़ें। पूज्य स्वामी जी महाराज इन कर्मों को पूरी श्रद्धा व निष्ठा से करते रहे। अतः इनसे उनका स्वास्थ्य जीर्ण–शीर्ण कैसे हो सकता है। यह सब जीर्णता व शीर्णता के कारण कैसे हो सकते हैं। शरीर की स्थिति के लिए प्रकृति कारण है, अगर एक क्षण के लिए मान भी लेते हैं कि यह भी कारण है तो साधन होता ही साध्य की प्राप्ति के लिए है। परमपिता परमेश्वर ने भी तो जब यह शरीर दिया तो साथ ही आदेश दिया कि हे सुत यह शरीर तुम्हें सजाने संवारने के लिए नहीं दिया। इयं ते यज्ञियातनुः इस शरीर के द्वारा तुमने यज्ञादि श्रेष्ठ कर्म करने हैं और अगर श्रेष्ठकर्मों को करते–करते यदि यह शरीर नष्ट भी हो जाता है तो इससे श्रेयस्कर क्या हो सकता है। श्री कृष्ण गीता में कहते हैं –

हतो वा प्राज्यसि स्वर्ग जित्वा वा भोगसि महिम्।

इस कर्मक्षेत्र में अपने कर्तव्यकर्मों को करते–करते यदि मृत्यु उपस्थित हो जाती है तो दिव्य लोकों में स्थान मिलेगा और यदि जीवन बना रहता है तो सद्वृति को धारण करता हुआ सुख व शान्ति का उपभोग करेगा।

यज्ञे तपसि दाने च स्थिति सदिति चोच्यते।
कर्म चैवतदर्थाय सदित्येवाभिधीयते।।

यज्ञ, तप और दान में मनुष्य की वृत्ति को सद्वृत्ति कहते हैं और इसी के निमित्त से किया गया कर्म को भी सद्कर्म कहते हैं। अतः स्वामी जी महाराज की वृत्ति भी हमेशा ही उत्तम बनी रही। गिरते स्वास्थ्य में भी उन्हें नींद भी ठीक आती रही रात्रि को बहुबार बाथरूम के लिए उठने के बाद भी बिस्तर पर पड़ते ही उन्हें नींद तत्क्षण आ जाती। प्रातः समय पर उठते स्नानादि से निवृत्त हो ध्यान भी लगाते। जब सहारे से अन्दर बाहर ले जाने की स्थिति आ गई तब भी जितनी देर तक बैठ सकते कुर्सी में बैठे भी ध्यान लगा लेते। बिस्तर में पड़े रहने की स्थिति में भी ऊँचे–ऊँचे विचार ऊँचे–ऊँचे संकल्प ही उनके मानस पटल पर उपजते रहते। कभी–कभी तो हमारे सामने कहते आज स्वप्न में दिव्य लोकों में देवजनों, ऋषियों, महर्षियों के साथ वार्ता करने में लगा। कभी–कभी समुद्र के किनारे रथ में सवार श्री कृष्ण जी मुझे देवलोक में ले जाने के लिए आए थे कहते थे, अन्तिम समय पर भी कुछ दिन पूर्व उन्होंने बारह वर्षीय सत्संग सत्र व यज्ञ का संकल्प ले लिया था। अपनी डायरी में उन्होंने उसका बजट भी बनाकर तैयार कर लिया था। श्री पूनम सूरी आदि का जब भी फोन आता अथवा कोई मिलने को आता तो उन्हें यही कहते कि मैं थोड़ा ठीक हो जाऊँ, हमने मिलकर बहुत काम करने हैं पवित्र

शेष पृष्ठ 6 पर

बीतराग तपस्वी आचार्य बलदेव जी नहीं रहे

आर्य समाज की महान विभूति, त्यागी, तपस्वी, वीतराग महात्मा आचार्य बलदेव जी का 28 जनवरी, 2016 को प्रातः निधन हो गया। वे 85 वर्ष के थे। उनके निधन का समाचार पाकर समस्त आर्य जगत में शोक की लहर फैल गई। आचार्य बलदेव जी ने अपने जीवन में सैकड़ों समर्पित युवकों को आर्य समाज के प्रचार–प्रसार के लिए तैयार किया और उन्हें नैष्ठिक ब्रह्मचर्य की दीक्षा लेने की प्रेरणा दी। गत एक–दो वर्ष से आचार्य जी अस्वस्थ चल रहे थे। आज सुबह 4 बजे रोहतक के दयानन्द मठ में सैर करते समय गिर जाने के कारण वे घायल हो गये और उनको पी.जी.आई. रोहतक में स्वास्थ्य लाभ के लिए ले जाया गया, जहाँ उन्होंने इस पार्थिव शरीर को त्याग दिया। उनके निधन से आर्य समाज की अपूर्णीय क्षति हुई है। हम सार्वदेशिक सभा की ओर से उनको श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए प्रभु से उनकी आत्मा की शांति एवं सद्गति के लिए प्रार्थना करते हैं।

– स्वामी आर्यवेश, सभा प्रधान

पृष्ठ–1 का शेष

24 अप्रैल से 1 मई, 2016 तक पंजाब में जन–चेतना यात्रा का आयोजन

विभिन्न प्रान्तों की आर्य प्रतिनिधि सभाओं के तत्वावधान में गौहत्या, गौमांस निर्यात एवं आर्य लोग बाहर से आये हैं आदि मुद्दों पर एक दिवसीय धरने का आयोजन किया जायेगा

2 से 13 मार्च, 2016 तक युवाओं के प्रेरणा स्रोत पूज्य स्वामी इन्द्रवेश जी महाराज के जन्मदिवस पर स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ आश्रम टिटौली रोहतक में 9वाँ बेटी बचाओ चतुर्वेद पारायण महायज्ञ का होगा भव्य आयोजन

मई मास में राजस्थान में निकाली जायेगी जन–चेतना यात्रा

सहयोग एवं समर्थन देने की घोषणा की। उन्होंने कहा कि वर्तमान में देश की समस्याओं के समाधान के लिए आर्य समाज से प्रभावी संगठन और कोई नहीं है। अतः आर्यों को अपने उत्तरदायित्व का बोध होना चाहिए और उन्हें आर्य समाजों की चार–दीवारी से बाहर आकर जनता के बीच जाकर अपनी गतिविधियाँ संचालित करनी चाहिए।

सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने सार्वदेशिक सभा के तत्वावधान में आयोजित होने वाली समस्त गतिविधियों के लिए आर्य दान–दाताओं से आर्थिक सहयोग देने की मार्मिक अपील की। उन्होंने कहा कि हम आर्य समाज के तेजस्वी स्वरूप को पूरे राष्ट्र के समक्ष प्रस्तुत करना चाहते हैं। वेद–भाष्य, मनुस्मृति, ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका, हिन्दी, अंग्रेजी तथा अन्य भाषाओं में सत्यार्थ प्रकाश, षड्दर्शन, उपनिषद एवं समस्त वैदिक साहित्य सस्ते मूल्य पर और अच्छे कागज पर प्रकाशित कर आम जनता को उपलब्ध कराने की महत्त्वाकांक्षी योजना हमारी प्राथमिकता में है। इसके लिए लाखों रुपये की आवश्यकता पड़ेगी। अतः आर्य समाज के समस्त दानवीरों को आगे बढ़कर सभा को दिल खोलकर दान देना चाहिए ताकि हम साहित्य प्रकाशन के कार्य को शीघ्रातिशीघ्र पूरा कर सकें।

स्वामी जी ने विभिन्न जन–चेतना यात्राओं, चतुर्वेद पारायण यज्ञों, अर्द्धकुम्भ मेला प्रचार शिविर के लिए भोजन सामग्री के रूप में दाल, चावल, आंटा, घी, सब्जी, रिफाइंड, मसाले आदि देने तथा अन्य व्यवस्थाओं के लिए अधिक से अधिक धनराशि दान देने की अपील की।

बैठक का सुन्दर संचालन सार्वदेशिक सभा के मंत्री प्रो. विट्ठलराव आर्य ने किया। इस अवसर पर उन्होंने सभा द्वारा लिये गये निर्णयों को क्रियान्वित करने के लिए आर्य समाज के सभी कार्यकर्ताओं, अधिकारियों तथा प्रान्तीय सभाओं के पदाधिकारियों का आह्वान करते हुए कहा कि वे सार्वदेशिक सभा के साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर सहयोग करें।

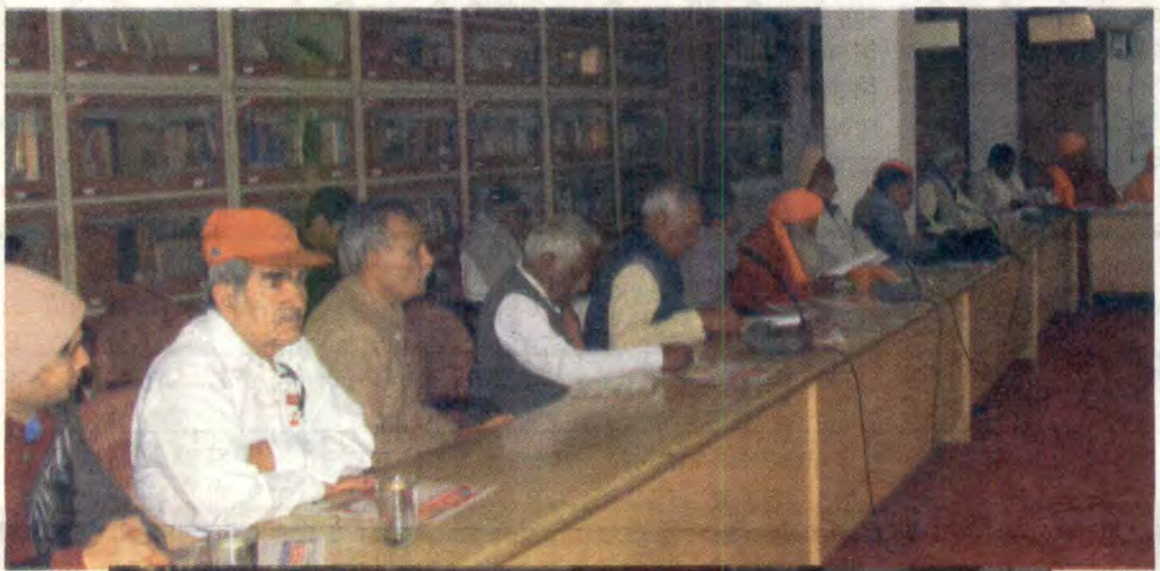

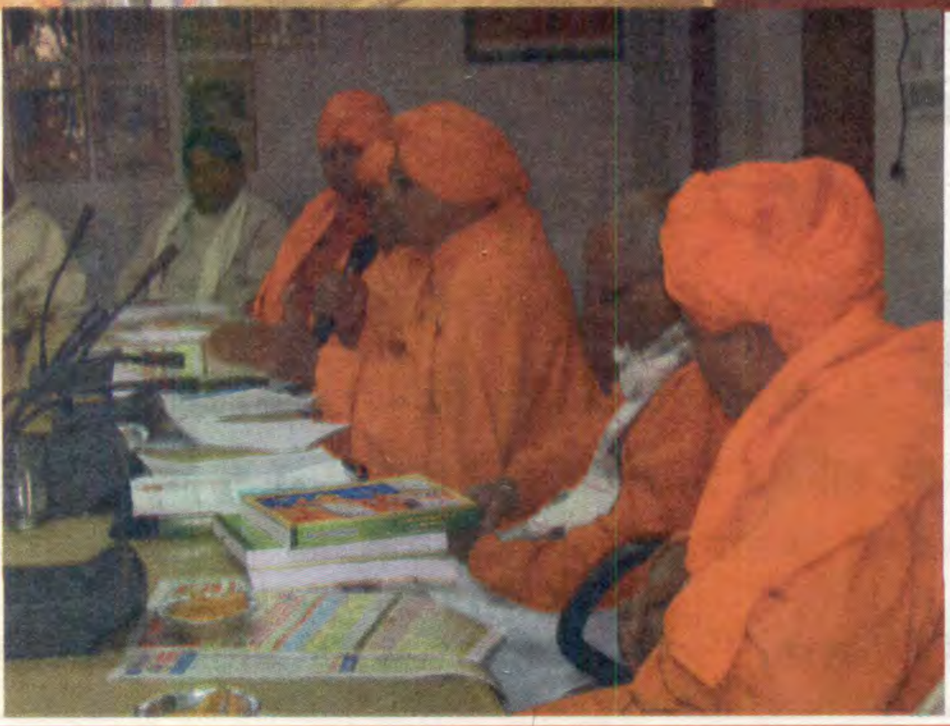

अन्तरंग सभा की इस बैठक में सर्वश्री स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती, स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती, स्वामी ओमवेश पूर्व गन्ना मंत्री उ. प्र. सरकार, स्वामी चन्द्रवेश वेदाचार्य, स्वामी सवितानन्द रांची, स्वामी सोम्यानन्द, स्वामी सच्चिदानन्द, श्रीमती इंदूबाला देहरादून, श्री रामसिंह आर्य जोधपुर, श्री गोविन्द सिंह भण्डारी, बागेश्वर उत्तराखण्ड, श्री दयाकृष्ण कांडपाल–अल्मोड़ा, श्री रामानन्द आर्य–पटना, बिहार, श्री बिरजानन्द–महामंत्री सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद्, श्री जयप्रकाश भारती–गाजीपुर, उ. प्र., डॉ. अनिल आर्य–दिल्ली, श्री शिवाजी राव शिंदे एडवोकेट– महाराष्ट्र, श्री सुरेन्द्र सिंह कादियाण–नांगलोई दिल्ली, श्री मामचन्द्र रेवाड़िया–दिल्ली, श्री राव रघुनाथ सिंह –नजफगढ़, मेजर विजय आर्य–चण्डीगढ़, श्री लक्ष्मीनाराण भार्गव–खण्डवा मध्य प्रदेश, श्री जयनारायण आर्य एवं श्री दीनदयाल आर्य –महाराजपुर, महात्मा देवमुनि–सुल्तानपुर, स्वामी सम्यक क्रांतिवेश एवं श्री दत्तात्रेय मुडे–महाराष्ट्र, श्री चांदमल आर्य, श्री भंवरलाल आर्य, श्री शिवप्रकाश सोनी–जोधपुर, श्री संजय गायकवाड़ एडवोकेट, आचार्य भानू प्रताप आर्य–इंदौर, बहन पूनम एवं प्रवेश आर्या–रोहतक, आचार्य सन्तराम आर्य, प्रो. श्योताज सिंह महामंत्री बंधुआ मुक्ति मोर्चा, ब्र. दीक्षेन्द्र आर्य अध्यक्ष सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् हरियाणा, आचार्य महावीर शास्त्री–रोहतक, श्री तेजपाल मलिक–दिल्ली, प्रो. सुरेन्द्र जी–बड़ौत, श्री रामपाल शास्त्री–दिल्ली, वैद्य धर्मपाल आदि ने अपने सुझाव प्रस्तुत किये। बैठक अत्यन्त उत्साह के वातावरण में सम्पन्न हुई।

पृष्ठ–4 का शेष

पूज्य स्वामी सुमेधानन्द जी व शारद यज्ञ

वेदवाणी पर उनकी अगाध निष्ठा थी, तद्विहित यज्ञ कर्म उन्हें बहुत प्रिय थे। यज्ञ सृष्टि का आधार है। यज्ञ से प्राणिमात्र का कल्याण होता है तो फिर यज्ञ करने वाले का अकल्याण कैसे हो सकता है। यज्ञ करने वाला याजक उस कल्याण से अछूता कैसे रह सकता है, रही लम्बे सत्रों की, महर्षि ने इसके विषय में कहीं नहीं लिखा तो खण्डन भी तो नहीं किया। ऋग्वेद के इस भाग का भाष्य करने के लिए ऋषिवर का जीवन नहीं रहा, जिसमें शारद यज्ञ विषयक मन्त्र अंकित है। शारद यज्ञ का वर्णन है। अन्यथा ऋषिवर इसके विषय में अवश्य अपना मन्तव्य देते। साल में एक बार दिन रात का यह यज्ञ किया जाता है जो सौभाग्यशाली इस यज्ञ को कर सकते हैं करें, जो नहीं कर सकते है न करें, इसके लिए परमात्मा ने किसी को बाध्य नहीं किया। ईश्वर ने इस यज्ञ को करने का उपदेश दिया है, उसकी महत्ता बताई है। कर्म करने में तो मनुष्य स्वतन्त्र है, इस कर्म को करना न करना उसके अपने अधिकार में है। स्वामी जी महाराज जैसे कुछ लोग ही होते हैं जो अपने सम्पूर्ण जीवन को यज्ञों के लिए समर्पित कर देते हैं और कुछ लोग ऊहापोह में ही फंसे रहते हैं। विवेचना करने में ही समय गवां देते हैं। न करने को वे दैनिक यज्ञ भी नहीं कर पाते। जन साधारण की तो बात और है यज्ञों पर लम्बे चौड़े प्रवचन देने वाले भी यहाँ उदासीन देखे गये हैं। दैनिक यज्ञ की प्रकृया जो ऋषिवर ने लिखी है अथवा बृहद यज्ञ की प्रक्रिया विशेष अवसरों के लिए ऋषिवर ने जो लिखी है जो कि घंटे भर से ऊपर की प्रक्रिया नहीं है, वह दैनिक यज्ञार्थियों के लिए लिखी है। पारिवारिक यज्ञों के लिए लिखी है साथ ही महर्षि ने पंचयज्ञ महाविधि में यह भी लिखा है कि जो इससे अधिक जितने समय तक चाहो स्वाहा पूर्वक गायत्री मंत्र से भी यज्ञ कर सकते हैं। **एवं प्रातः सायं संध्योपासन करणानन्तमेतैर्मन्त्रै होमम् कृत्वा अग्रे यावदिच्छातावद् गायत्री मन्त्रेण स्वाहान्तेन होत्रम् कुर्यात्** यह वाक्य जन साधारण के लिए लिखा गया है। जो वेद का पारायण नहीं कर सकते उनके लिए यह आसान तरीका यज्ञ का बता दिया। दीर्घकालिक यज्ञों का ही प्रतिपादन ऋषि के इस वाक्य से होता है न कि खण्डन। यज्ञों से देवजन पितृजन तृप्त होते हैं। पर्यावरण का शोधन होता है। रोग शोक के कीटाणु दूर होते हैं एक स्वच्छ व निर्मल वातावरण का सृजन होता है। यह सर्वविदित है तो यह मास अर्धमास में कहीं–कहीं विरले स्थानों पर छोटे स्तर पर किए जाने वाले यज्ञों से यह संभव नहीं है। इसके लिए बृहत्तर यज्ञों का लम्बे–लम्बे दीर्घसत्रीय यज्ञों का आयोजन प्रचुर मात्रा में होना ही चाहिए जिनमें प्रचुर मात्रा में घृत की धाराएँ प्रवाहित की जाएं। उत्तम–उत्तम पदार्थों से निर्मित, पौष्टिक रोगनाशक सुगन्धित व मिष्ठान से युक्त हव्य आहूत किया जाये। जिसके दिव्य रस व दिव्य गन्ध से तृप्त होकर देवजन व पितृजन अचल सुख सौभाग्यों से हमारी झोलियाँ भर दें। द्युःलोक अन्तरिक्ष लोक यज्ञ के धूम से प्रपूरित हो सुख व शांति की वर्षा करेंगे। तब हमारा ओ३म् द्यौशांतिः – "मन्त्र को पढ़ना भी सार्थक होगा। पूज्य स्वामी जी महाराज का इस ओर प्रयास रहा। अपने सामर्थ्य के अनुसार उन्होंने इसमें अपनी अहम भूमिका अभिनीत की। अपने भक्तों को अपने शिष्यों को अपने प्रियजनों को उन्होंने इस ओर प्रेरित किया। उनके द्वारा समर्पित राशि को इस कार्य में लगाकर उनकी कमाई को धन्य किया। असहिष्णु लोगों ने नाना प्रकार के आक्षेप भी लगाए, पर वे टस से मस नहीं हुए। निन्दन्तु नीति निपुणा – "के अनुसार उन्होंने जो मार्ग चयनित कर लिया था उस पर वे जीवन के अन्तिम क्षणों तक अडिग रहे। किसी ने तो कहा कि पैसा कमाने का धन्धा बना लिया है। कितना पैसा स्वामी जी ने इसमें कमा लिया, कितना पैसा उन्होंने एकत्रित किया। यह उन लोगों से पूछो जिन्होंने प्रिय ऋषि व पूज्य स्वामी जी के इलाज पर सारा व्यय किया। संस्था के पास उनके इलाज के लिए पैसे नहीं थे, इतिहास बताता है। महाराज रघु सर्वहुत यज्ञ किया करते थे। जिसमें वे अपने द्वारा एकत्रित धन दौलत को सम्पूर्ण रूप से दान कर देते थे। पूज्य स्वामी जी भी उसी इतिहास को इस कलिकाल में दुहराते हुए जो राशियाँ यज्ञ के निमित्त से एकत्रित होती, श्रद्धालूजन श्री चरणों में समर्पित करते उन्हें यज्ञ का भाग बनाते ही बनाते जो पल्ले में होता उसे भी यज्ञ में समर्पित कर देते। पुनः वर्षभर मठ की गतिविधियों को आगे चलाने के लिए संघर्षरत हो जाते। कौत्स ऋषि गुरु को दक्षिणा में देने के लिए सोलह करोड़ स्वर्ण मुद्राएँ मांगने के लिए जब महाराजा रघु के पास आते हैं। महाराजा रघु ने सर्वहुत यज्ञ में अपनी सारी धनराशि दान कर दी थी। अतः मिट्टी के बर्तनों में खाना खा रहे थे। ब्रह्मचारी कौत्स यह देख निराश होकर लौटने लगे तो आग्रह पूर्वक उन्हें ठहराया। बार–बार पूछने पर उनके आने का कारण जाना तो, अपने कोषाध्यक्ष से कोषागारों की स्थिति जानी, तो उन्हें खाली पाया। उन्होंने तुरन्त कुबेर को संदेश भेजा। कुबेर ने संदेश पाते ही रघु के सभी कोषागार धन से भर दिए। पूज्य स्वामी जी के पास भी कोई सहायतार्थी बेटी की शादी के लिए आता। अथवा कोई चिकित्सार्थी अथवा और किसी भी प्रकार का अभ्यर्थी आता तो स्वामी जी फोन उठाकर भाई जनक को अथवा भाई प्रवीण जी को या भाई श्री अयोध्या प्रकाश मेहरा को जो कि अब स्वामी जी के साथ ही दिवंगत हो गए आदेश देते और वे वांछित राशि भेज देते। जिसे स्वामी जी अभ्यर्थी को समर्पित कर देते। महाराजा दिलीप के विषय में कालिदास जी लिखते हैं –

त्यागाय संभृतार्थानाम् सत्याय मितभाषिणाम्।

अर्थात् महाराजा दिलीप के वंशस्थ त्याग करने के लिए ही धन संग्रहीत करते थे। पूज्य स्वामी जी दान तो लेते थे पर उसे अपने पास नहीं रखते थे। वितेष्णा मया परित्यक्ता संन्यास की इस प्रतिज्ञा को उन्होंने अन्तिम क्षणों तक निभाया। लोकेष्णा मया परित्यक्ता यह प्रतिज्ञा भी उन्होंने झूठी नहीं होने दी। वितण्डा वादियों ने, धन के लिए प्रतिष्ठा के लिए यह सब ड्रामेबाजियाँ कर रहे हैं कहा, कईयों ने तो जगराते वाला बाबा की उपाधि से भी उन्हें नवाजा। दिल की कालिख हर प्रकार से बाहर निकाली पर राग–द्वेष की भस्मी रमाए, इस भोले बाबा के सिर से ज्ञान गंगा बहती गई। इसकी धूनी जलती रही। आक्षेप प्रत्याक्षेप रूपी पतंगे आते गए। शंकर की धूनी की लौ पर वे सब समाप्त होते गए। शिव के ललाट से निकलने वाली चन्द्रकिरणें शीतलता बिखेरती रही और अन्ततः महाकाल रूपी गहन अमावस्या के आंचल में अपने आपको विलीन भी कर गई। शंकर अपने अलौकिक अलंकरणों के साथ दिव्यलोकों को चले गए। हाँ उनके द्वारा प्रज्ज्वलित धूनि शेष रह गई है। अब उस धूनी को प्रज्वलित रखना उसके गणों का काम है। धूनी के साथ शिव का नाम अमिट हैं। शिव को धूनी से अलग नहीं कर सकते। धूनी रमाने से जैसे सीधे शिव की धूनी का आभास होता है। ज्ञान होता है, ऐसे ही शारद यज्ञ से उस दिव्य पुरुष का ज्ञान स्मरण स्वतः ही हो जायेगा। क्योंकि इसके साथ उनका अटूट सम्बन्ध है। अतः गणों के द्वारा यानि हम अनुयायियों के द्वारा उस धूनी को यज्ञ विशेष को जलाए रखना जारी रखा उन दिव्यात्माओं की यादों को संस्मरणों को जीवित रखना है। इस एक यज्ञ कर्म से हमारे बहुत सारे कर्तव्य कर्म सिद्ध हो रहे हैं। अतः इससे श्रेष्ठ कर्म और क्या हो सकता है। यह सौदा घाटे का है या बांधे का स्वयं निर्णय करें। ●

शुभ सूचना ओ३म् शुभ सूचना

ऋषि निर्वाण दिवस एवं दीपावली के शुभ अवसर पर

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा प्रकाशित

ऋषिवर दयानन्द सरस्वती द्वारा विरचित

अद्भुत और अनुपम कालजयी ग्रन्थ

सत्यार्थ प्रकाश

लागत मूल्य 80/– रुपये

100 प्रति लेने पर मात्र 40 रुपये में दिया जायेगा

भारी छूट पर उपलब्ध

10 से अधिक प्रति लेने पर 50 रुपये में दिया जायेगा

23 गुणा 36 के 16वें साईज तथा पेपर वैक जिल्द में आकर्षक टाइटल के साथ बढ़िया कागज पर प्रकाशित सत्यार्थ प्रकाश उपलब्ध

–: प्रकाशक :–

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, "दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

आर्य समाज की गतिविधियाँ

मकर संक्रांति के उपलक्ष्य में पांच कुण्डीय यज्ञ आयोजित

दिनांक 17 जनवरी, 2016 को आर्य समाज, स्वामी दयानन्द मार्ग, अलवर में श्री जगदीश प्रसाद गुप्ता, प्रधान आर्य कन्या विद्यालय समिति, अलवर की अध्यक्षता में "मकर संक्रांति पर्व" अति हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। आर्य समाज, स्वामी दयानन्द मार्ग, अलवर के "पंडित हेतराम आर्य सभागार" में पांच कुण्डीय यज्ञ प्रातः 8.30 से 10.30 बजे तक पं. शिव कुमार कौशिक एवं पुरोहित रघुवीर आर्य, सत्यव्रत सामवेदी जी, कार्यकारी प्रधान सार्वदेशिक सभा जयपुर एवं स्वामी आर्यवेश जी प्रधान सार्वदेशिक सभा, दिल्ली, श्री विरजानन्द जी बहरोड़, आचार्य संतराम जी – हरियाणा, सतीजा जी जयपुर द्वारा विशेष वेद मंत्रों की आहुतियों के साथ सम्पन्न कराया गया।

पांच कुण्डीय यज्ञ में 25 परिवार यजमान बने। यज्ञ मानव का सर्वोपरि कर्म है। पांच कुण्डीय यज्ञ के बाद वानप्रस्थी श्री अमरमुनि जी द्वारा मकर संक्रांति पर्व व यज्ञ पर प्रकाश डाला।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने अपने प्रवचन में कहा कि नशा मुक्ति, शराबबन्दी, भ्रष्टाचार, अन्धविश्वास, भ्रूण हत्या, बेटी बचाओ तथा लड़कियों की घटती संख्या पर खेद व्यक्त किया तथा पूरे देश के आर्य समाज में एकजुटता बने। जैसे संगठन में रहोगे वैसे बनोगे। उन्हानें गौहत्या तथा गौमांस के निर्यात को बन्द करने पर बल दिया।

प्रदीप कुमार आर्य ने अपने धन्यवाद में सभी का आभार प्रकट किया। ईश्वर देवी इस समारोह की संयोजिका थीं।

इस अवसर पर सर्वश्री कै. रघुनाथ सिंह, डॉ. एन.एन. गांधी, छब्बील दास, डॉ. राजेन्द्र कुमार, रामनारायण सैनी, वेद प्रकाश शर्मा, धर्मवीर आर्य, सतपाल आर्य, बी. डी. गुप्ता, ज्ञान प्रकाश मित्तल, हेमराज कल्ला, धर्मवीर आर्य, बृजेन्द्र देव आर्य, रामजीलाल शर्मा, श्रीमती सुमन आर्य, शुचि आर्य, शशि बाला भार्गव, सरोज शर्मा, मंजू शर्मा, आशा शर्मा, अंजू माथुर, आशा शर्मा, आर्य समाजों के प्रतिनिधि तथा अत्यधिक संख्या में आर्यजन उपस्थित थे। कार्यक्रम के उपरान्त पौष माह के अन्तर्गत विशेष वैदिक पौष बड़ा प्रसाद वितरित किया गया।

– प्रदीप आर्य, प्रधान, आर्य समाज, स्वामी दयानन्द मार्ग, अलवर, राजस्थान

आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री 'विश्व वेद प्रचारक सम्मान' से विभूषित

अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति के वैदिक विद्वान एवं यशस्वी लेखक आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री जी को 17 जनवरी, 2016 को आर्य समाज रमेश नगर नई दिल्ली ने 'विश्व वेद प्रचारक सम्मान' से विभूषित किया। उन्हें यह सम्मान मारीशस में सफल वेद प्रचार कर स्वदेश लौटने एवं वैदिक सिद्धातों व मूल्यों के प्रचार–प्रसार के क्षेत्र में विशिष्ट योगदान के लिए वैदिक सत्संग समारोह में प्रदान किया गया।

सम्मान रूप में उन्हें शॉल, माल्यार्पण, सम्मान राशि एवं प्रशस्ति पत्र विनम्रता पूर्वक आर्य समाज रमेश नगर के यशस्वी प्रधान श्री नरेन्द्र आर्य सुमन जी, श्री विनय आर्य जी एवं माता कमला आर्या स्मारक ट्रस्ट के अध्यक्ष प्रि. अरूण आर्य जी द्वारा प्रदान किया गया।

आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री जी का परिचय देते हुए कार्यक्रम के संचालक ने कहा कि आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री जी विलक्षण प्रतिभा के धनी, ओजस्वी वक्ता, देश–विदेश में ध्यान साधना शिविरों के आयोजक, अध्यात्म पथ के यशस्वी संपादक, अनेक स्तरीय ग्रन्थों के लेखक, वेदादि शास्त्रों के प्रखर चिन्तक एवं 70 पुरस्कारों एवं सम्मानों से विभूषित हैं। जिनमें आर्य विभूषण पुरस्कार, विद्यामार्तण्ड पुरस्कार, बिहारीलाल भाटिया पुरस्कार, सरस्वती रत्न सम्मान, साहित्य सृजन सम्मान आदि उल्लेखनीय है।

ऐसे वैदिक विद्वान को सम्मानित करने में हम गौरव का अनुभव करते हैं।

– नरेन्द्र आर्य 'सुमन', प्रधान

काकोरी काण्ड के शहीदों को याद किया

जयपुर : स्थानीय रामपुरा मुहाना रोड स्थित जी.एल. सैनी मेमोरियल कॉलेज ऑफ नर्सिंग में काकोरी काण्ड के शहीदों रामप्रसाद बिस्मिल, अशफाक उल्ला खाँ व रोशन सिंह को भावभीनी श्रद्धांजलि दी गई।

कार्यक्रम का आयोजन कॉलेज के प्रशिक्षणार्थियों द्वारा किया गया। बिस्मिल की गज़लों की प्रस्तुति के साथ अन्य शहीदों की राष्ट्रभक्ति भी सराही गई। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद्, राजस्थान के अध्यक्ष श्री यशपाल 'यश' रहे। कॉलेज निदेशक दीपांकर यश ने आगन्तुकों का स्वागत और प्राचार्य योगेश गोयल ने आभार व्यक्त किया।

– ईश्वर दयाल माथुर

स्वामी सम्यक क्रांतिवेश (संभाजी पवार) राज्य स्तरीय "महाराष्ट्र रत्न भूषण" पुरस्कार से सम्मानित

महाराष्ट्र के जाने माने आर्य संन्यासी स्वामी सम्यक क्रांतिवेश (संभाजी पवार गुरुजी) को साहित्य प्रेमी मंडल सोमेश्वरनगर बारामती पुणे द्वारा राज्य स्तरीय "महाराष्ट्र रत्नभूषण" पुरस्कार 2015 प्रदान किया गया। स्वामी पवार गुरु जी ने धार्मिक क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य किया है और योगदान देकर समाज को सही दिशा देने का प्रयास किया है इस लिए यह पुरस्कार बारामती में श्री डॉ. सदानन्द मोरे, अखिल भारतीय मराठी साहित्य सम्मेलन के अध्यक्ष द्वारा उनके हाथ से प्रदान किया गया। दिनांक 25 नवम्बर, 2015 को बारामती में पुरुषोत्तम रामेश्वर जगताप की अध्यक्षता में पुरस्कार प्रदान का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। प्रास्ताविक प्रा. हनुमंत वि. माने अध्यक्ष साहित्य प्रेमी मंडल ने किया। मानपत्र, सन्मान पत्र स्मृति चिन्ह, मारवाड़ी पगड़ी, शॉल, श्रीफल देकर सम्मान किया गया। पुरस्कारोतर भाषण में स्वामी (संभा जी पवार) ने कहा कि विद्यार्थी अवस्था में ही मैं महर्षि दयानन्द जी का सत्यार्थ प्रकाश पढ़कर प्रभावित हुआ और आर्य समाज से जुड़ा और धार्मिक सामाजिक शैक्षणिक कार्य करता रहा इसलिए इसका श्रेय स्वामी दयानन्द जी के सत्यार्थ प्रकाश ग्रंथ को है। जीवन के अंतिम क्षण तक मेरा कार्य चलता रहेगा।

– स्वामी सम्यक क्रांतिवेश

विश्व शांति यजुर्वेद पारायण यज्ञ सम्पन्न

जयपुर : नगर की मुहाना मंडी रामपुरा रोड स्थित सैनी नर्सिंग कॉलेज में यजुर्वेद पारायण यज्ञ सम्पन्न हुआ। तीन दिवसीय यज्ञ की पूर्णाहुति रविवार 3 जनवरी, 2016 को हुई। भारी संख्या में श्रद्धालुओं ने आहुतियाँ दी।

यज्ञ के होता परम ऋषि भक्त श्री रामकिशोर शर्मा पुत्र–पौत्रादिकों के साथ थे। पुत्रगण जयदेव, डॉ. प्रशांत एवं सी.ए. निशांत सपत्नीक सभी सत्रों में यजमान रहे। विशिष्ट जनों में सांसद अर्जुन मेघवाल तथा राज्य के सतर्कता आयुक्त सज्जनसिंह ने भी उपस्थिति दर्ज की।

यज्ञ के ब्रह्मा आचार्य सोमदेव ने वेद मंत्रों की सुग्राह्य शैली में व्याख्या के साथ–साथ जीवन को श्रेष्ठ बनाने पर बल दिया। वेद पाठिनी श्वेता शास्त्री ने संस्कृत में मंगल गान किया। अपने कुशल संयोजन के माध्यम से यज्ञ के सभी सत्रों में छाए रहे यशपाल 'यश'। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में यज्ञों की उपयोगिता पर मन्तव्य प्रकट करते रहे श्री 'यश'।

– ईश्वर दयाल माथुर

आर्य समाज घटांग्रा के वयोवृद्ध संस्थापक सदस्य का निधन

दिनांक 10 दिसम्बर, 2015 को आर्य समाज घटांग्रा जिला परभणी के संस्थापक सदस्य ज्ञानोबा रामजी पवार का प्रातः 11.30 बजे घटांग्रा में उनके निवास स्थान पर निधन हुआ। उनकी आयु 95 वर्ष की थी। 1956 में संभा जी पवार गुरुजी ने यहां आर्य समाज की स्थापना की थी। दिवंगत ज्ञानोवा रामजी पवार घटांग्रा आर्य समाज के संस्थापक सदस्य थे। वे अत्यन्त शांत स्वभाव के धीर गंभीर व्यक्ति थे। आर्य समाज परली तथा लातूर के कार्यक्रमों में अनेक बार वे पवार गुरु जी के साथ जाते थे। दिनांक 11 दिसम्बर, 2015 को प्रातः 10.30 बजे घटांग्रा में उनका वैदिक विधि से अंत्येष्ठी संस्कार सम्पन्न हुआ। स्वामी सम्यक क्रांतिवेश तथा जनार्दन पवार गुरु जी ने अंतेष्ठी संस्कार का कार्य सम्पन्न कराया। उनके सुपुत्र माणिक ज्ञानोबा पवार तथा सुपुत्री कांता बाई तथा भतीजा शिवराज पवार ने आहुतियां दी। पदमिन बाई वैश्वानरदेव पवार ने भी सहयोग दिया। बहुत बड़ी संख्या में लगभग 2000 स्त्री–पुरुष उपस्थित थे। मुखाग्नि सुपुत्र माणिक ज्ञानोबा पवार ने दिया। वैदिक पद्धति के अंत्येष्टी संस्कार का प्रभाव सभी उपस्थित जनो पर बहुत अच्छा पड़ा और यह सर्वत्र चर्चा का विषय बना।

– स्वामी सम्यक क्रांतिवेश

राज्यस्तरीय युवा चेतना शिविर सम्पन्न

आर्ष ज्योति गुरुकुल आश्रम कोसरंगी महासमुन्द में 23 से 27 दिसम्बर, 2015 को राज्यस्तरीय युवा चेतना शिविर का आयोजन सम्पन्न हुआ। जिसमें प्रदेश के अनेक विद्यालयों के छात्रों ने योगासन, जूडो कराटे के साथ–साथ वैदिक धर्म की शिक्षा प्राप्त की।

शिविरार्थियों को बौद्धिक शिक्षा प्रदान करने के लिए संस्कृत विद्यामण्डलम् के अध्यक्ष डॉ. गणेश कौशिक, सचिव सुरेश शर्मा, अपेक्स बैंक के अध्यक्ष व भारतीय जनता पार्टी के नेता अशोक बजाज, मुख्यमंत्री छ. ग. शासन के निजी सलाहकार डॉ. अशोक चतुर्वेदी, रायपुर एम्स के डीन डॉ. सूर्यप्रकाश धनेरिया, गुजरात से पधारे स्वामी शान्तानन्द जी महाराज आदि अनेक गणमान्य विद्वान एवं स्थानीय नेतागण उपस्थित रहे।

इस पंचदिवसीय शिविर में युवाओं को शारीरिक, मानसिक व बौद्धिक स्तर पर विशेष प्रशिक्षण दिया गया। कपिलदेव शास्त्री, मुकेश शास्त्री, दुःखनाशन आर्य आदि अनेक व्यायाम शिक्षकों ने कुम्फू कराटे, योगासन आदि के प्रशिक्षण द्वारा आत्मरक्षा के गुर सिखाये। इस शिविर के साथ–साथ अथर्ववेद पारायण महायज्ञ की भी पूर्णाहुति 27 दिसम्बर को की गई। इस सम्पूर्ण आयोजन के प्रेरणाश्रोत स्वामी धर्मानन्द सरस्वती व गुरुकुल के आचार्य कोमल कुमार ने अपने सहयोगियों के साथ इस आयोजन को सुव्यवस्थित सम्पन्न किया।

'योगेश्वर श्रीकृष्ण' पुस्तक छपकर तैयार

– लेखक स्व. पं. चमूपति एम. ए.

'योगेश्वर श्रीकृष्ण' नामक पुस्तक पृष्ठ संख्या–256, अच्छे जिल्द एवं कागज में छपकर तैयार है। जिसकी कीमत 100/: रुपये है, जिस पर 25 प्रतिशत छूट उपलब्ध है। परन्तु भेजने में डाक व्यय खर्च होता है। अतः एक पुस्तक मंगाने के लिए डाक व्यय सहित 100/– रुपये भेजकर मंगा सकते हैं।

प्राप्ति स्थान – सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, "महर्षि दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–2
दूरभाष :–011–23274771, 23260985

POSTED AT N.D.P.S.O., N.D.-01 On 29–30 जनवरी, 2016
प्रकाशन की तिथि : 28 जनवरी, 2016
वैदिक सार्वदेशिक
28 जनवरी से 03 फरवरी, 2016
पंजीयन संख्या DELMUL/2005/15488
डाक पंजीकरण संख्या DL(c)-01/1213/15-17
Licence to Post without prepayment of Postage. [U (c)-289/2015-17]

प्रतिष्ठा में :–

नैधि सभा

अवितरण की दशा में लौटाएँ –
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

वेदाः ऋग्वेद यजुर्वेद सामवेद अथर्ववेद

अजेय प्राण

वृत्रस्य त्वा श्वसथादीषमाणा विश्वे देवाः अजहुर्ये सखायः।
मरुद्भिरिन्द्र सख्यं ते अस्त्वथेमा विश्वाः पृतना जयासि।।

–ऋ॰ ८/९६/७

ऋषिः–तिरश्चीर्द्युतानो वा मारुतः।। देवता–इन्द्रः।। छन्दः–विराट्त्रिष्टुप्।।

विनय–हे मेरे आत्मा! तेरे असली साथी तो प्राण ही हैं। जब तक प्राण तेरे साथी नहीं हो जाते तब तक अन्य देवों का साथ बेकार है, प्रत्युत समय पर धोखा देने वाला है। मैं जब उत्तम ग्रन्थ पढ़ता हूँ, सन्तों की वाणी सुनता हूँ, पवित्र उपदेश श्रवण करता हूँ तब मन में बड़े दिव्य, उत्तम विचार उत्पन्न होते हैं; आन्तरिक मनन और भावना से मन की अवस्था ऐसी ऊँची हो जाती है कि हृदय में मानो देवसमाज लग जाता है। मैं अपने को बिल्कुल निर्विकार, निष्काम और पवित्र समझने लगता हूँ, परन्तु पाप–प्रलोभन के आते ही यह सब–का–सब उलट जाता है, वृत्रासुर के सम्मुख आने पर इस सब देव–समाज में भग्गी पड़ जाती है, उसकी फुंकार से सब दिव्य विचार क्षण में उड़ जाते हैं, जरा–सी देर में हृदय में महाबली वृत्रासुर का राज्य जम जाता है। उस समय यह जानता हुआ भी कि मैं बुरा कर रहा हूँ, पाप कर रहा हूँ, पाप की ही ओर खिंचा चला जाता हूँ। मनुष्य इस अवस्था से कैसे पार हो? इसका एक ही उपाय है कि मनुष्य प्राणों की समता प्राप्त करे। प्राणों का सम होना ही प्राणों की (मरुतों की) आत्मा के साथ मैत्री होना है। आत्मा के साथ जुड़ने पर, आत्मा के समीप होने पर प्राण सम और शान्त हो जाते हैं। ये सम हुए प्राण कार्य करने के बड़े, एकल साधन बन जाते हैं। प्राण की सम अवस्था में जो विचार होते हैं, वे स्थिर और दृढ़ होते हैं; इस अवस्था में किये गये संकल्प बड़ा विस्तृत प्रभाव रखते हैं। आत्मशक्ति जब प्राणों को आत्मगृहीत करके उन द्वारा प्रकट होती है तो उसके सामने कोई नहीं ठहर सकता, सब वासनाएँ दब जाती हैं, कोई भी पाप–विचार सिर ऊपर नहीं उठा सकता। बड़े–बड़े प्रलोभन, पाप की बड़ी–बड़ी फौजें आत्मा के एक संकल्प के द्वारा दब जाती हैं, समाप्त हो जाती हैं। आत्माग्नि की एक लपट में भस्म हो जाती है, जब वह आत्म–संकल्प सम हुए, सखा बने हुए प्राणों द्वारा प्रकट होता है और जब आत्माग्नि प्राणमाध्यम द्वारा सहस्त्र–गुणित होकर जल उठती हैं। प्राणों की इस मैत्री को, दोस्ती को पाकर आत्मा क्या नहीं कर सकता? प्राण महाबली है। वह जब तक असम रहता है तब तक उसका बल वृत्रासुर के काम आता है, परन्तु जब वह सम हो जाता है तो वह आत्मा का हो जाता है। आत्मा का सखा प्राण अजेय है।

शब्दार्थ–**इन्द्र**=हे आत्मन्! **विश्वे देवाः**=सब देव, सब दिव्यभाव **ये सखायः**=जो तेरे साथी बनते हैं **वृत्रस्य श्वसथात्**=पापासुर के सांस से, फुंकार से, बल–प्रदर्शन से **ईषमाणाः**=डरकर भागते हुए **त्वा**=तुझे **अजहुः**=छोड़ देते हैं। हे इन्द्र! **ते सख्यम्**=तेरी मैत्री, तेरा साथ **मरुद्भिः**=प्राणों के साथ **अस्तु**=यदि होता है या हो **अथ**=तो तू **इमाः विश्वाः पृतनाः**=पाप की इस सब बड़ी फौज को **जयासि**=जीत लेता है।

साभार- 'वैदिक विनय' से
आचार्य अभयदेव विद्यालंकार

सोशल मीडिया के माध्यम से स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ें

आर्य युवा सन्यासी व सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ने के लिए इस लिंक पर क्लिक करें www-facebook-com/SwamiAryavesh व फेसबुक पेज को लाइक करें व अन्य मित्रों को भी प्रेरित करें।

ई–मेल : aryavesh@gmail.com
Tel. :-011-23274771

अर्धकुम्भ मेला 2016 के अवसर पर
सार्वदेशिक सभा, आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तराखण्ड एवं वैदिक विरक्त मण्डल के तत्वावधान में
विशाल वेद प्रचार शिविर का आयोजन एवं पाखण्ड–खण्डिनी पताका का आरोहण
20 मार्च से 13 अप्रैल, 2016 तक

पूर्व वर्षों की भांति अर्धकुम्भ मेला हरिद्वार में जनवरी, 2016 से प्रारम्भ होगा। इस अवसर पर विभिन्न मठ, मंदिर एवं धार्मिक, सामाजिक संस्थाओं के पंडाल सजेंगे। अत: सार्वदेशिक सभा, आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तराखण्ड एवं वैदिक विरक्त मण्डल की संयुक्त बैठक में यह निश्चय किया गया है कि 20 मार्च से 13 अप्रैल, 2016 तक इस अवसर पर हरिद्वार मे आने वाली धर्म पारायण जनता को धर्म के सच्चे स्वरूप से अवगत कराने के लिए एवं नशाखोरी, कन्या भ्रूण हत्या, मांसाहार एवं धार्मिक अन्धविश्वास जैसी कुरीतियों से दूर रहने का संकल्प दिलाने के लिए तथा वेद प्रचार के माध्यम से ईश्वर भक्ति का सच्चा स्वरूप समझाने के लिए एक विशाल वेद प्रचार शिविर का आयोजन किया जायेगा। शिविर में चतुर्वेद पारायण यज्ञ, विभिन्न समस्याओं से सम्बन्धित सम्मेलन योग साधना शिविर तथा नशाखोरी, कन्या भ्रूण हत्या, जैसी सामाजिक बुराईयों के विरुद्ध जन–चेतना रैली आयोजित की जायेगी। इस अवसर पर जहाँ आर्य जगत के उच्चकोटि के विद्वान, भजनोपदेशक एवं कार्यकर्ता जनता का मार्ग दर्शन करेंगे वहीं देश के कोने–कोने से आर्यजन अपनी–अपनी समाजों के बैनर लेकर शिविर में भाग लेंगे।

इस अवसर पर महर्षि दयानन्द की परम्परा को जीवित रखते हुए पाखण्ड खण्डिनी पताका का आरोहण भी किया जायेगा जो मेले में विशेष आकर्षण का कार्य करेगी। आप सभी से निवेदन है कि अभी से मेले में आने का मन बना लें तथा इस महत्त्वपूर्ण आयोजन को सफल बनाने के लिए व्यक्तिगत रूप से तथा अपनी समाज की तरफ से अधिक से अधिक धनराशि तथा खाद्य सामग्री (दाल, चावल, आटा, घी, चीनी, सब्जी आदि) दान स्वरूप देकर पुण्य के भागी बनें तथा वेद प्रचार के इस महत्त्वपूर्ण कार्य में अपना योगदान प्रदान करें। वेद प्रचार शिविर का विस्तृत कार्यक्रम बहुत शीघ्र आर्यजनों के समक्ष प्रस्तुत किया जायेगा। इस सम्बन्ध में विशेष जानकारी के लिए सभा कार्यालय से सम्पर्क किया जा सकता है। अपना सहयोग या दान राशि सार्वदेशिक सभा कार्यालय में व्यक्तिगत रूप से अथवा **"सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा"** के नाम चैक, बैंक ड्राफ्ट आदि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा "दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–2 के नाम भेजने की कृपा करें।

निवेदक

स्वामी आर्यवेश
प्रधान–सार्व.सभा

स्वामी दिव्यानन्द
प्रधान वैदिक विरक्त मण्डल

स्वामी प्रणवानन्द
कोषाध्यक्ष वैदिक विरक्त मण्डल

प्रो. विट्ठलराव आर्य
मंत्री–सार्व.सभा

पं. माया प्रकाश त्यागी
कोषाध्यक्ष–सार्व.सभा

गोविन्द सिंह भण्डारी
प्रधान–आ.प्रति. सभा उत्तराखण्ड

सुखदेव वर्मा
कोषाध्यक्ष–आ.प्रति. सभा उत्तराखण्ड

दयाकृष्ण काण्डपाल
मंत्री–आ.प्रति. सभा उत्तराखण्ड

इं. प्रेम प्रकाश शर्मा
प्रधान, आर्य समाज देहरादून

डॉ. वीरेन्द्र पंवार
प्रबन्धक आर्य समाज हरिद्वार

प्रो॰ विट्ठलराव आर्य, सभा मंत्री, प्रकाशक व मुद्रक द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन, (रामलीला मैदान/आसफ अली रोड), नई दिल्ली-110002 के लिए प्रकाशित तथा ज्योति प्रिंटिंग प्रेस, ई-94, सैक्टर-6, नोएडा-201301 से प्रकाशित एवं मुद्रित। (फोन : 011-23274771, 23260985 टेलीफैक्स : 23274216)
सम्पादक : प्रो॰ विट्ठलराव आर्य (सभा मन्त्री) मो.:0-9849560691, 0-9013251500 ई-मेल : sarvadeshik@yahoo.co.in, sarvadeshikarya@gmail.com वैबसाइट : www.vedicaryasamaj.com
वैदिक सार्वदेशिक साप्ताहिक में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक या सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सैद्धान्तिक मतैक्यता होना अनिवार्य नहीं है।